रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

साहित्यकार हमारे दिशा–दर्शक और ऊर्जा के स्रोत हैं – कुलपति प्रो. मिश्र

जबलपुर 3 अगस्त। भारतीय समाज में साहित्यकारों का महत्वपूर्ण अवदान रहा है। साहित्य यदि समाज का दर्पण है तो उस साहित्य और समाज को जोड़ने की महनीय कड़ी है कवि, साहित्यकार। ये साहित्यकार हमारे लिए दिशा–दर्शक और उर्जा के स्रोत होते हैं। उपरोक्त विचार कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने हिंदी एवं भाषाविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त जी की जयंती के ऑनलाईन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए।

मैथिलीशरण गुप्त की जयंती 'कवि दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अटल बिहारी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेमसिंह डहेरिया जी ने बताया कि मैथिलीशरण गुप्त ने खड़ी बोली हिंदी में काव्य सृजन महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से प्रारंभ किए। डॉ. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर की हिंदी अध्येता डॉ लक्ष्मी पाण्डेय जी ने गुप्त जी के साहित्य के काव्यशास्त्रीय पक्ष को विस्तार से समझाते हुए कहा कि मैथिलीशरण गुप्त ऋषि परंपरा के कवि रहे हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार डॉ. बीना बुदकी जी मुंबई से कार्यक्रम में शामिल हुई। उन्होंने गुप्त जी के साहित्यिक योगदान पर चर्चा करते हुए बताया कि गुप्त जी ने इतिवृत्तात्मक शैली में निबंध आदि की रचना किए हैं।

कार्यक्रम के प्रारंभ में हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक जी ने सभी अतिथि का वाचिक स्वागत करते हुए विषय का प्रवर्तन किया। कार्यक्रम डॉ. बालस्वरूप द्विवेदी, डिण्डोरी, डॉ. विनय शुक्ल जम्मू, लक्ष्मी द्विवेदी, कटनी, सुमन केशरी, वाराणसी, डॉ. नीलम दुबे, डॉ. विपुला सिंह, श्रीमती राखी चतुर्वेदी, डॉ. अजय शुक्ल, योगेश कुमार, मनोज यादव, दीप्ति, डॉ. पूर्णिमा ब्योहार आदि बड़ी संख्या में अतिथि विद्वान और शोधार्थी जुड़कर लाभान्वित हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशा रानी ने और आभार स्वाति शरण ने किया।

रादुविवि जनसम्पर्क प्रकोष्ठ / क्रमांक / 1042 / 03.08.2021